# उपसंहार

लोक की रामलीला यह बताती है कि वह हर वर्ष बदल जाती है। उसमें ऐसे असंख्य स्थान बन जाते हैं जो नए-नए समसामयिक लोकप्रिय उपदानों और रूपों को अपने भीतर समा लेते हैं या उनके साथ घुलनशील हो जाते हैं।

इस अध्ययन के अनुसार रामलीलायें एक मिश्रित कला के रूप में प्रत्येक स्थान विशेष (space specific) रूप में हमेशा से होती आईं हैं, इसका अर्थ यह नहीं कि यह किसी एक जगह होती है बल्कि वह अलग स्थान पर अलग रूप परिवर्तित कर लेती है । चूँकि रामलीला एक सामुदायिक क्रिया है, इसलिए वह उस समुदाय को खास तौर पर संबोधित रहता है। इलाहाबाद की पजावा, पथरचट्टी, बलापुर, सिकंदरा तथा दारानगर की रामलीलायें इसी बात को प्रमाणित करती है।

मंच पर रूपंकर होकर रामलीला अन्य के लिए भी संबोधित रहती है, यह उनका 'मास ओडियन्स' यानि दर्शक समूह बनना है। यहाँ आकर जातिगत भेदों का लोप हो जाता है। और सब जातियाँ 'मास' बन जाती हैं, 'जन' बन जाती हैं, 'लोक' बन जाती हैं।

लीला मूलतः ब्रम्ह की चर्या (Action) है और वह लोक मंगल की कामना से शासित होता है जिस समाज में रामलीला घटित होती है वहाँ के लोक का कल्याण और उनके माध्यम से सर्वजन के कल्याण की कामना उसकी केन्द्रीय धारणा है और इसके लिए समाज में एक आदर्श की स्थापना करना लीला का एक उद्देश्य है, हालांकि कई बार यह आदर्श स्थापना

बदलाव की उम्मीद भी करती है, उसे उन सब बुरी प्रवित्तियों के विरुद्ध खड़ा होना पड़ता है जिसे सामाजिक कसौटियों पर बुरा समझा जाता है। समाज की आकांक्षा-लालसा, विकास और गतिरोध किसी न किसी रूप में कथानक, अभिनय और मंचन के शिल्प में घटित होता है। अलग-अलग समाजों की जो भिन्नता होती है उसे प्रस्तुति की भिन्नता के रूप में भी देखा जा सकता है। सामाजिक स्थितियों को धर्म शासित और धर्म को आध्यात्म उन्मुक्त बनाने की पूरी प्रक्रिया रामलीला है पर मूलतः यह आदर्श स्थिति है सच यह है कि वह अनुष्ठानिक होते हुए भी लौकिकता के रूप को धारण किए होता है और उसके लौकिक संदेश अध्यात्म से अधिक बड़े व्यापक संदर्भों को सँजोये रहते हैं। लोक मंगल की इच्छा व्यक्तिगत इच्छा नहीं है यह पूरे उस लोक की समूहिक कल्याण की एषणा से उत्पन्न हुआ है। यह लोक भी केवल मनुष्यों का लोक नहीं हैं इसमें जीव-जगत, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु सब उसके हिस्से हैं। लौकिकता का यह परिप्रेक्ष्य उसे आध्यात्म के समकक्ष और कहीं-कहीं धार्मिक अनुष्ठान से श्रेष्ठ साबित करती है।

रामलीला के अध्ययन से एक एक बात स्पष्ट होती है कि इसे धार्मिकता की दृष्टि और निरी कला के रूप में अलग कर के देखना शायद संभव नहीं है। इसके पीछे सामजिकता का होना है जो कई बार मिथक का सहारा लेकर कभी अनुष्ठानिक तो कभी लौकिक रूप में दृष्टिगत होती है। रामलीला अपने परिवेश में जाति-पाती, धर्म - वर्ण और आर्थिक सभी सीमाओं का अतिक्रमण करता है और सबको अपने भीतर समाहित किये रहता है। रामलीला का विस्तार देश-विदेशों में हुआ। वहाँ के सभी निवासी हिन्दू नहीं है पर यह सभी जगहों में लोकप्रिय हुआ। हर समुदाय अपनी आकांक्षाओं के राम को गढ़ लेता हैं और उसके साथ अपने दुख-सुख को जोड़कर आनद और विषाद का अनुभव करता हैं। उसकी स्थानीयता और देशजता का समावेश हर स्थान की रामलीला में हो जाता है और रामलीला की विशेषता है कि वो छोटी से छोटी वस्तु को जीव - जन्तु को मनुष्यों को नर - नारी को उदात्ता प्रदान करती है।

अंततः शोध कुछ महत्वपूर्ण सवाल रेखांकित करता है -

- यदि रामलीला लोक की धार्मिक प्रस्तुति है तो इसमें महिलाओं का प्रवेश क्यों बाधित रहा ?
- क्या रामलीला राज्य, लिंग, जाति के आधार पर बनती बिगड़ती रही है ?
- उपरोक्त बातें यदि सिद्ध हो जाती हैं फिर भी यह लगभग सभी कलारूपों में दिखाई देता है ?